इन्साफ करने का हुक्म

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''अल्लाह तआला तुम को इन्साफ करने का हुक्म देता है (हर एक के साथ) एहसान करने का और संबन्धियों को (ताक़त के मुताबिक) देने का और बेहयाई (यानी ज़िना और उसकी तरफ उभारने वाली चीज़ों) और नाजायज़ हर्कतों से और अत्याचार से मना करता है तुम को नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत पाओ'' (सूरे नह्ल-९०)

अद्ल के प्रसिद्ध अर्थ इन्साफ करने के हैं यानी अपनों और अंजान सबके साथ इन्साफ किया जाए। किसी के साथ दुशमनी या मुहब्बत या करीबी होने की वजह से इन्साफ के तक़ाज़े आहत न हों। एक दूसरा अर्थ संतुलन भी है यानी किसी मामले में भी अतिशयोक्ति न की जाए यहां तक कि दीन के मामले में भी नहीं क्योंकि दीन में किसी चीज़ की ज़्यादती (अतिशयोक्ति) का कारण बन जाती है जो सख्त निन्दनीय है और दीन में किसी चीज़ को घटाना दीन में कोताही है यह भी अप्रिय है।

एहसान का एक अर्थ अच्छा व्यवहार और क्षमा कर देने के हैं। दूसरा अर्थ तफज्जुल के हैं यानी वाजिब हक से ज़्यादा देना और वाजिब अमल से ज़्यादा अमल करना। मिसाल के तौर पर किसी काम की मज़दूरी सौ रूपये तय है लेकिन देते वक़्त १०,२० रूपये ज़्यादा दे देना, तयशुदा सौ रूपये की अदायगी वाजिब हक़ है और यह इन्साफ है। १०, २० रूपये बढ़कार देना एहसान (उपकार और भलाई) है। इन्साफ से भी समाज में अम्न स्थापित होता है लेकिन एहसान से और ज़्यादा अपनाइयत की भावनाएं उत्पन्न होती हैं और फर्ज़ की अदायगी के साथ नफिल का एहतमाम वाजिब अमल से ज़्यादा अमल है जिससे अल्लाह की विशेष सामीप्ता प्राप्त होती है। एहसान का तीसरा अर्थ अमल में निस्वार्थता और बेहतरीन इबादत है जिसको हदीस में ''अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसे देख रहे हो'' से परिभाषित किया गया है। रिश्तेदारों का हक़ अदा करने यानी उनकी मदद करने को हदीस में सिला रहमी (रिश्ता नाता जोड़ना और निभाना) कहा गया है और हदीसों में इस पर बहुत जोर दिया गया है। फहशा का अर्थ अश्लीलता होता है। ''मुनकर'' हर वह काम है जिसे शरीअत ने अवैध क़रार दिया है और ''बग़्य'' का अर्थ अत्याचार है। एक हदीस में बताया गया है कि रिश्ता नाता तोड़ना और बग़्य, यह दोनों जुर्म अल्लाह को इतने अप्रिय हैं कि अल्लाह तआला की तरफ से (आखिरत के अतिरिक्त) दुनिया में भी इनकी फौरी सज़ा की बहुत ज़्यादा संभावना रहती है। (इब्ने माजा, किताबुज जोह्द, बाबुल बग़्य)

''तफसीर, अह्सनुल बयान'' से साभार

मासिक

इसलाहे समाज

अगस्त 2021 वर्ष 32 अंक 6

मुहर्रमुल हराम 1443 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. इन्साफ करने का हुक्म 2
2. तुम अपने आपको और अपने घर वालों को.. 4
3. इस्लाम की शिक्षाओं का पाबन्द बनें 7
4. औलाद का नैतिक प्रशिक्षण 8
5. तहैयतुल मस्जिद 11
6. दूध की बरकत 13
7. इस्लाम को समझने के लिए वैचारिक उदारता.. 16
8. "काहिली की निन्दा" 19
9. प्रेस रिलीज़ (सैलाब से संबन्धित) 21
10. प्रेस रिलीज (ध्वजारोहण समारोह) 22
11. प्रेस रिलीज (मुहर्रमुल हराम का चांद) 24
12. अपील 25
13. कामयाबी की राह 26
14. सैलाब प्रभावितों की मदद की अपील 27
14. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

तुम अपने आप को और अपने घर वालों को...

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

धर्म एक आध्यात्मिक ही नहीं बल्कि एक समाजी व मानवीय आवश्यकता भी है। यह न केवल इन्सान को उसके पालनहार का वास्तविक आज्ञापालक बनाता है बल्कि यह उसे सही अर्थों में अच्छा बाप, अच्छी मां, अच्छी बेटी अच्छी बहन, अच्छा पड़ोसी, अच्छा नागरिक और अच्छा इन्सान भी बनाता है जिस की वजह से देश व समाज में भाई चारा, प्रेम, अम्न व शान्ति और सदभावना व एकता की बुनियादें मजबूत होती हैं और देश व समाज निर्माण व विकास की नई नई ऊंचाईयों को छूता जाता है। लेकिन जैसे ही व्यक्ति और समाज का रिश्ता दीन व धर्म से टूटता है तो फिर जीवन के हर विभाग में तबाही व बर्बादी कत्ल व लूट, शोषण नाइन्साफी, असमता, रिश्वत कालाबाज़ारी और वह सब बुराइयां जन्म लेती हैं जो कि बदकिस्मती से आज के समाज का हिस्सा बन गई हैं। इससे भी बढ़कर यह कि जो दीन दूरियों और नफरतों को मिटाने के लिये आया था अब इसी दीन को अधिकांश समय नफरत व दुश्मनी को बढ़ाने और आपसी भेदभाव को फैलाने में स्तेमाल किया जा रहा है।

आज दीन से दूरी का यह परिणाम है कि देश व समाज ही नहीं बल्कि घर और खानदान का सिस्टम और संतुलन बिगड़ रहा है, सहीह व गलत का अन्तर खतम होता जा रहा है मानसिक व वैचारिक आवारगी उठान पर है। मां बाप का बच्चों पर से कन्ट्रोल खत्म होता जा रहा है और उनकी हर प्रकार की बेराह रवी को तथाकथित शिक्षा और जॉब के नाम पर सहन किया जा रहा है। हद तो यह है कि अन्तरधर्मीय शादी का रूझाान भी तेजी से पनप रहा है और लड़के व लड़कियां ऐलानिया गैरों से जुड़ रहे हैं और नऊज़ूबिल्लाह उनके बीच पति पत्नी के नाजायज़ रिश्ते काइम हो रहे हैं जो कि एक सभ्य समाज के लिये चिन्ता का क्षण है।

चूंकि देश व समाज में किसी भी तरह की जागरूकता, बदलाव या सुधार की शुरूआत और बुनियादी कड़ी व्यक्ति होता है इसलिये तार्किक और प्राकृतिक रूप से व्यक्ति की इस्लाह (सुधार) की तरफ ध्यान केन्द्रित करना ज़रूरी है। व्यक्ति की इस्लाह हो गई तो धीरे-धीरे घर, कुंबा और कबीले की भी इस्लाह हो जाएगी और फिर यह मुबारक सिलसिला देश व समाज के विकास पर भी जाकर दम लेगा। यही वजह है कि इस्लाम धर्म जो कि प्राकृतिक दीन है इसने देश व समाज के सुधार के लिये व्यक्ति की इस्लाह को ज़रूरी क़रार दिया है और उस पर यह जिम्मेदारी डाली है कि वह अपने परिवार की इस्लाह और दीनी तालीम व तर्बियत करे। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन इन्सान हैं और पत्थर, जिस पर सख्त दिल मजबूत फरिश्ते तैनात हैं जिन्हें जो हुक्म अल्लाह तआला देता है उसकी नाफरमानी नहीं करते

बल्कि जो हुक्म दिया जाता है बजा लाते (पालन) करते हैं'' (सूरे तहरीम-६)

अपनी इस्लाह के साथ साथ अपने घर वालों की इस्लाह और उनकी दीनी व इस्लामी तालीम व तर्बियत एक ऐसा कर्तव्य है जिससे लापरवाही आखिरत में हिलाकत ही नहीं बल्कि सैंकड़ों दुनियावी बिगाड़ और अपमान व घाटे का भूमिका बन सकती है। यही वजह है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समाज के निमार्ण की इस पहली ईंट की तरफ विशेष ध्यान दिलाते हुए फरमाया कि जब बच्चा सात साल का हो जाये तो उसे नमाज़ का हुक्म दो और जब वह दस साल के हो जाएं और उनमें नमाज़ के बारे में सुस्ती और काहिली देखो तो उनको डांट डपट करो (अबू दाऊद) ओलमा ने लिखा है कि बच्चों को इस तरीक़े पर दीन के दूसरे अहकाम व नैतिकता मिसाल के तौर पर रोज़ा वगैरह की तालीम और बड़ों का सम्मान और छोटों पर दया का उपदेश देना चाहिए ताकि जब वह बालिग हो जाएं तो उनकी धार्मिक चेतना मजबूत हो जाए।

अफसोस की बात है कि ''अपनी और अपने घर की इस्लाह आप'' का यह अहम काम हम से नहीं हो पा रहा है और जबतक हम अपनी और परिवार की दुनियावी ज़रूरतों की पूर्ति के साथ दीनी तालीम व तर्बियत की तरफ भी ध्यान नहीं केन्द्रित करें गे और स्वयं और अपने परिवार वालों को दीन के सांचे में ढ़ालने की कोशिश नहीं करेंगे नई नस्ल में दीनी व वैचारिक बेराहरवी जगह पाती रहे गी और तालीम व रोज़गार के नाम पर उनके आत्म सम्मान और जान व माल का शोषण होता रहेगा।

आज विडंबना यह है कि सोशल मीडिया में लोग दीनी व तर्बियती पोस्ट डाल कर संतुष्ट हो जाते हैं कि हम ने समाज की इस्लाह का कर्तव्य अदा कर दिया लेकिन इस्लाह के बजाये बिगाड़ की रफ्तार दिन बदिन बढ़ती जा रही है। कभी हमने इस पर गौर किया? कारण स्पष्ट है कि हम स्वयं को और अपने परिवार को इस दीनी व तर्बियती पोस्ट से मावरा (अलग) समझते हैं। तक़रीरें दूसरों के लिये करते हैं। लेख दूसरों के लिये लिखते हैं। पोस्ट और टिवीट अपनों के अलावा के लिये करते हैं कभी स्वयं इस पर अमल करने की कोशिश नहीं करते और न ही अपनी आल व औलाद को इस पर अमल करने की चिंता होती है। नसीहत करने वाले श्रोताओं और पाठकों को ही अपनी नसीहत व उपदेश का सम्बोधित समझते हैं और अपने अलावा दूसरों को ही इन नसीहतों का मुहताज और सज़ावार समझते हैं जबकि सुनने वाले इन नसीहतों को कुबूल करने के बजाये स्वयं इन पर अमल न करने का आरोप धरते हैं। कहने का मक़सद यह है कि हर कोई अपने आप को बेकुसूर और इस्लाह की ज़रूरत न होने और दूसरों को दोषी और इस्लाह का मोहताज मानने पर तुला हुआ है इसलिये परेशानियां घटने के बजाये बढ़ती जा रही हैं और इस तरह करनी व कहनी के विरोधाभास की वजह से अल्लाह की नाराजगी के सबब समाज की इस्लाह के सारे प्रयास अकारत चले जाते हैं। जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''ऐ ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं, तुम जो करते नहीं उसका कहना अल्लाह को सख्त नापसन्द है'' (सूरे सफ्फ-२-३)

सारांश यह है कि छोटे मोटे

वाक़आत पर निराश होने की ज़रूरत नहीं है। अभी भी वक़्त है कि हम अपनी दीनी इस्लाह व तर्बियत के साथ साथ अपने बाल बच्चों की भी इस्लाह व तर्बियत की तरफ ध्यान दें। टोले मुहल्ले की मस्जिदों में सुबह व शाम की पाठशाला स्थापित करके बच्चे बच्चियों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आयोजन करें। उनको सहाबा व सहाबियात और अपने पूर्वजों के किस्से और वाक्आत सुनाएं। बच्चियों को अनैतिक माहौल से बचाएं, उनका उठक बैठक और आने जाने की जगहों का खास ख्याल रखें मोबाइल फोन से जहां तक हो सके दूर रखें। वक़्त पर उनकी शादी कर दें, शादी की प्रचालित रस्मों और तौर तरीकों का बाईकाट करें। शादी को आसान बनाएं उनको अन्तरध र्मीया शादी के नुकसानात से आगाह करें और दीन व शरीअत के आदेशों पर पाबन्दी का आदी बनाएं। उनको बताएं कि उनकी तरक़्क़ी व इज़्ज़त और खूबसूरती लाइट, साउंड, केमरा, फिल्म और बेहिजाबी में नहीं है बल्कि इनकी असल इज़्ज़त व विकास हिजाब व पर्दे में निहित है।

अपने लड़कों को भी पवित्र जीवन गुज़ारने और सलफ (पूर्वजों) का आदर्श अपनाने की प्रेरणा दें। इसी तरह मस्जिदों के सम्माननीय इमाम व खतीब हज़रात अन्तरध र्मीय शादियों की खराबियों को अपने खुतबों का शीर्षक बनायें और दीनी संगठन ऐसे सिस्टम विकसित करें कि हर व्यक्ति तक ओलमा और प्रचारकों की पहुंच संभव हो सके। अल्लाह हम सबको केवल बात करने के बजाए कर्मयोगी भी बनाये।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

इस्लाम की शिक्षाओं का पाबन्द बनें

नौशाद अहमद

अगर इबादत के मामले को लेकर बात की जाए तो बहुत ही अफसोस नाक स्थिति सामने आती है। अल्लाह ने इन्सान को अपनी इबादत के लिये पैदा किया है लेकिन जब हम अपने आस पास देखते हैं तो मालूम होता है कि हम लोगों में से अधिकांश इससे गाफिल हैं, और इबादत के नाम पर केवल जुमा की नमाज़ तक सीमित हो कर रह गये हैं और जुमा के दिन भी अधिकतर लोग जमाअत के खड़ी होने का इन्तेज़ार कर रहे होते हैं इमाम के साथ दो रकात की फर्ज़ नमाज़ अदा करने के बाद ज्यादातर लोग मस्जिद से बिना सुन्नत पढ़े सड़कों और घरों की तरफ भागते हैं यह रूझान यह दर्शाता है कि इबादत के सिलसिले में हम लोग कितने जागरूक और चिंतित हैं? नमाज़ के लिये मस्जिद से पांचों वक़्त अज़ान देकर बुलाया जाता है दूसरे लोग जाग जाते हैं लेकिन हम लोग मीठी नींद में पड़े रहते हैं, आज कुछ लोगों को सिर्फ दो तीन मिनट के अज़ान से परेशानी होने लगती है उनकी नींद में खलल पड़ जाता है और हमारी हालत यह है कि हम लोग इस आपत्ति से किसी तरह का पाठ प्राप्त करने के लिये तैयार नहीं हैं क्या यह हमारी गफलत और दीन से दूरी का परिणाम नहीं है? क्या यह सच नहीं है कि हम लोग अपने असलाफ की इबादतों और धार्मिक गतिविधियों को भूल गये हैं? आज कुरआन की आयतों पर आपत्ति होने लगी है, कुछ लोग कुरआन की शिक्षाओं की गलत व्याख्या कर रहे हैं, पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को नकारात्मक दिशा दे रहे हैं, कुछ लोगों के अपराध को पूरी कम्यूनिटी पर थोपने का प्रयास हो रहा है, यह सब हमारे बेअमल होने का अंजाम है, इस्लाम की तालीम और उसके सिद्धांतों से दूरी का परिणाम है। गलत फहमी इतनी ज़्यादा फैलायी जाने लगी है कि इन गलत फहमियों (भ्रांतियों) का निवारण करना मुश्किल हो गया है, सोशल मीडिया को कुछ लोगों ने दूसरों को भ्रमित करने का माध्यम बना लिया है। ऐसे हालात में हमारे लिये ज़रूरी है कि अपने कर्मों और व्यवहार से इस्लाम की सहीह छवि पेश करने की कोशिश करें, नमाज़, रोज़ा, दुआ नैतिकता, सदव्यवहार हम मुसलमानों के लिये बहुत बड़ा सहायक है लेकिन अफसोस है कि हम लोग इन तमाम चीज़ों से दूर हो गये हमारे बेअमल होने की वजह से आज हमारी वह छवि पेश की जा रही है जिसका इस्लाम और मुसलमानों से कोई संबन्ध नहीं है। अपनी छवि को बेहतर बनाने का आसान और सहीह रास्ता यही है कि हम अपने व्यवहार से इस्लाम की छवि को पेश करें, और दूसरों के लिये आदर्श बनने का प्रयास करें और दुनिया में हमारे आने का जो मक़सद है उसको हासिल करें और अपने आप को इस्लाम की शिक्षाओं का पाबन्द बनायें और संसार वालों को अपने व्यवहार और कर्मों से एहसास दिलाएं कि इस्लाम की शिक्षाएं पूरी मानवता के लिये रहमत हैं।

औलाद का नैतिक प्रशिक्षण

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

औलाद बच्चे हों या बच्चियाँ अल्लाह की बड़ी नेमत, महान एमानत और बुढ़ापे का सहारा हैं, वह इस्लाम का भविष्य, राष्ट्र एवं समुदाय का भविष्य और माँ बाप के भविष्य हैं इसलिये उनको शिक्षा एवं प्रशिक्षण, सभ्यता से सुसज्जित करना मां बाप की ज़िम्मेदारी है।

वह चाहें तो उनका बेहतरीन प्रशिक्षण और अच्छा आचरण बना करके उनके अकीदे को दुरूस्त, चरित्र एवं सभ्यता से सुसज्जित करके अपने घर के माहौल को खूबसूरत पवित्र और उज्जवल बना सकते हैं। साथ ही एक अच्छा एवं स्वस्थ्य समाज के गठन करने में बुनियादी भूमिका अदा कर सकते हैं। जिससे समाज के माहौल में सुगमता पैदा हो और जो दीन व दुनिया की सफलताओं और बुलन्दियों का अमीन होगा।

खास तौर से ऐसे ज़माने में जब कि मुस्लिम समाज फितना व फसाद का स्थल बन चुका है, अधर्म खतरे के निशान से ऊपर जा रहा है, अधर्म की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं। महानता व सम्मान के रिश्ते मिटते जा रहे हैं। ईमान वालों की औलाद बेईमान हो रही हैं। गर्ल फ्रेन्ड और बुवाय फ्रेन्ड के नये चलन ने कितने मां बाप की नींदें हराम कर दी हैं। मोबाइल व इन्टरनेट के गलत प्रयोग, कोचिंग के गैर दीनी माहौल से नई नई समस्याएं जनम ले रही हैं। नौजवान इस्लामी सभ्यता के बजाये पाश्चात्य सभ्यता के दिलदादह बनते जा रहे हैं ऐसे हालात में मां बाप की जिम्मेदारियां बढ़ गई हैं। बाप का यह फर्ज़ है कि वह अपनी औलाद को उन चीज़ों से बचाएं जिन से अल्लाह नाराज़ होता है और जिन से बचने का उसने हुक्म दिया है और उन्हें ऐसे कर्मों का पाबन्द बनाएं जिनको करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और जिन से अल्लाह की निकटता हासिल होती है। बच्चे अच्छी खूबियों को अपनाएं। अच्छे आचरण के आदर्श बनें ताकि वह ईमान, कर्म और नैतिकता में इस्लाम का प्रतिनिधुत्व करें और अपने बाप के सच्चे उत्तराधिकारी बनें। खानदान का नाम रोशन करें। इज़्ज़त और प्रतिष्ठा की राह पर अग्रसर हो सकें।

याद रखें अगर ज़मीन अच्छी है लेकिन फसल की देख भाल न की जाए तो फसल खराब हो जाती है। घर अच्छा हो लेकिन घर में दीन न हो तो नस्ल खराब हो जाती है जिस बाग का माली न हो और जिस बाग की देख रेख न हो तो वह बाग़ जल्द उजड़ जाता है। इसलिये बच्चे के सरपरस्त अपने बच्चों पर कड़ी निगाह रखें और हर वक़्त उनका अच्छा प्रशिक्षण अच्छी नैतिकता और आध्यात्मिक माहौल की चिन्ता करें।

मेरे अल्लाह मेरी नस्लों को ज़िल्लत से निकाल

हाथ फैलाए मुसलमान बुरा लगता है (मनज़र भोपाली)

बच्चों के नैतिक प्रशिक्षण में मां बाप की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है इसलिये बच्चों को शुरूआत ही से

उच्च आचरण का आदी बनाने की कोशिश की जाए। उन्हें सच्चाई, इमानतदारी, बहादुरी, बुजुर्गों की इज्ज़त, पड़ोसियों से बेहतर व्यवहार, मेहमान का सत्कार जैसी नैतिक खूबियों का वाहक बनाया जाये और बुरी आदतों जैसे चोरी, गाली गुलूज, मादक पदार्थों के सेवन और गुमराही से सख्ती से बचाया जाए उनमें अध्ययन की आदत डाली जाए, उन्हें अच्छी किताबों और पत्रिकाएं उपलब्धा कराई जाएं उनके लिये एक निजी लाइब्रेरी बनाई जाए उनके अन्दर जिम्मेदारी का एहसास पैदा किया जाए ताकि भविष्य में देश, समुदाय और मानवता को उनसे लाभ हो।

जिस तरह मां बाप अपने अधिकारों के बारे में संवेदनशील होते हैं उसी तरह अपने कर्तव्यों को निभाने में अन्जान न बनें।

बच्चों को अपनी ज़िन्दगी के मकसद से आगाह किया जाए। ज़िन्दगी के मकसद का स्पष्ट अवधारणा उन्हें दुनिया में अपना मकाम निर्धारित करने में सहायक साबित होगा। भविष्य के लिये बुलन्द एरादे और इनकी पूर्ति के लिये बच्चों में लगन, मेहनत और जिज्ञासा के जजबात पैदा करने में मां बाप का अत्यंत अहम रोल होता है।

बच्चों को पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पावित्र जीवनी से अवगत कराना, और रसूल के आदर्शों के पालन को ईमान का हिस्सा बनाना, इसी तरह अपने पूर्वजों की ज़िन्दगी को आदर्श के रूप में सामने लाना ज़रूरी है।

मां बाप वक़्त की कद्र स्वंय भी करें और बच्चों को शुरू ही से वक़्त के सहीह स्तेमाल की आदत डालें। वक़्त को बर्बाद करने से उसकी भरपाई नहीं होती है। इस कीमती दौलत का बेहतरीन स्तेमाल कामयाबी की कुंजी है।

औलाद के प्रशिक्षण के संबन्ध में रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कीमती निर्देश मौजूद हैं जिन पर अमल करके हम अपनी नस्लों को नैतिकता से सुसज्जित कर सकते हैं और उन्हें योग्य बना कर अच्छे समाज का गठन कर सकते हैं। निम्न पंक्तियों में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ निर्देश और प्रशिक्षण के दिशानिर्देश सिद्धांत कुरआन की रोशनी में पेश करना चाहते हैं।

१. जब बच्चे सात साल के हो जाएं तो उन्हें नमाज़ का हुक्म दें और जब दस साल के हो जाएं तो उनके बिस्तर अलग कर दें। (अबू दाऊद-४६५)

इस हदीस में बचपन में ही नमाज़ पढ़ने और बिस्तर अलग करने का हुक्म इस लिये दिया गया है ताकि वह शिष्टा सीख लें और सृष्टि के बीच रहन सहन के तरीके सीख लें।

२. बच्चों को खाने का तरीक़ा बतानाः सहाबी अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैं बच्चा था रसूल के पालन पोषण में था और मेरे हाथ बर्तन के चारों तरफ (खाने के दौरान) घूम रहे थे। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐ बच्चे अल्लाह का नाम ले कर दाएं हाथ से खाओ और अपने हाथ से खाओ इसलिये इसके बाद मेरे खाने का तरीक़ा हमेशा यही रहा''। (बुखारी ५३७६)

३. अगर घर में बच्चा मेहमान की हैसियत से आया हो तो उसे नमाज़ पढ़ने का उपदेश दें और न पढ़ने पर उससे पूछ ताछ करें। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला

अन्हुमा बयान करते हैं कि मैं अपनी खाला मैमूना के घर था। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इशा की नमाज़ के वक्त आए और घर वालों से कहाः क्या बच्चे ने नमाज़ पढ़ी? घर वालों ने कहा हां, फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेट गये। (अबू दाऊद, किताबुस सलात-१३५६)

४. बच्चों को रोज़ा रखवाना और मस्जिद ले जानाः हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने रमज़ान के महीने में शराब पीने वाले एक शख्स से कहा तू हलाक हुआ (तूने रमज़ान के महीने में शराब पी है) हमारे बच्चे भी रोज़ेदार हैं फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने इसको मारा पीटा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आशूरा के दिन सुबह को अन्सार की आस पास की बस्तियों में यह सन्देश भेजवाया कि जिस ने रोज़ा रखा हो वह रोज़ा बरक़रार रखे और जिसने रोज़ा न रखा हो वह दिन का बाक़ी हिस्सा भी इसी हालत में गुज़ारे। रबीअ रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि इसके बाद हम हमेशा रोज़ा रखते थे और अपने बच्चों को भी रोज़ा रखवाते थे और उन्हें अपने साथ मस्जिद भी ले जाया करते थे। हम बच्चों को रोटी की गुड़िया बना दिया करते थे। जब इन में से कोई भूक की वजह से रोता तो हम उसका दिल बहलाने के लिये उसे गुड़िया दे देते थे यहां तक कि इफतार का वक़्त तो जाता था (बुखारी १९६० किताबुस सौम)

५. हराम व हलाल का ख्याल रखनाः माँ बाप की यह ज़िम्मेदारी है कि वह हलाल व हराम का पास व लिहाज रखें और औलाद को भी इसका आदी बनाए। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निवासे हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हो ने अनजाने में सदके का एक खुजूर मुंह में डाल लिया। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुरन्त हलक़ में उंगली डाल कर इसे बाहर निकलवा दिया और फरमायाः निकालो! तुम्हें नहीं मालूम कि मुहम्मद के खानदान पर सदक़ा हराम है। (बुखारी, किताबुज-ज़कात-१४९१)

६. अपनी औलाद को नेक बनाने के लिये दुआ करें यही पैगम्बरों का आदर्श और तरीक़ा है और अल्लाह के नेक बन्दों की विशेषता है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ मांगी :

"ऐ मेरे रब! इस शहर को शान्तिपूर्ण बना दे और मुझे और मेरे बेटों को बुतों की इबादत से बचा ले" (सूरे इब्राहीम-३५)

"ऐ मेरे रब! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ का पाबन्द बना दे, ऐ हमारे रब और मेरी दुआ को कुबूल कर ले"। (सूरे इब्राहीम-४०)

अल्लाह के बन्दे यह दुआ करते हैंः "ऐ हमारे रब! हमारी बीवियों और हमारी औलाद को आंखों की ठण्डक बना और हमें परहेज़गारों के इमाम बना" (सूरे फुर्क़ान-७४)

"ऐ मेरे रब मुझे क्षमता दे कि मैं तेरी उस नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझे और मेरे मां बाप को दिया है और ऐसे नेक आमाल करूँ जिन्हें तू पसन्द करता है और तू मेरी औलाद को नेक चलन वाला बना दे। मैं तेरे हुजूर तौबा करता हूं और बेशक मैं मुसलमानों में से हूं" (सूरे अहक़ाफ-१५)

सलीक़ा नहीं मुझ को रोने का वर्ना बड़े काम का है यह आखों का पानी

तहैयतुल मस्जिद

मौलाना अस्अद आज़मी

तहैयतुल मस्जिद एक अहम सबबी नमाज़ है जिस के बारे में पूरी तरह से जानकारी बहुत से लोगों को नहीं है। संभवतः इस की वजह यह है कि इस पर कम ही लिखा और बोला जाता है यही वजह है कि साधारण लोग जब किसी को यह नमाज़ पढ़ते हुए देखते हैं तो आश्चर्य व्यक्त करते हैं। इसके बारे में जानकारी न होने के सबब बहुत से लोग इस संबन्ध ा में विभिन्न प्रकार के सवालात पेश करते हैं यह उनकी नाइल्मी को दर्शाता है।

तहैयतुल मस्जिद वह दो रकात नमाज़ है जो मस्जिद में दाखिल होने के बाद बैठने से पहले पढ़ी जाती है। तहैया का अर्थ होता है सलाम या सलामी, गोया कि यह नमाज़ मस्जिद की सलामी होती है जिस तरह किसी के पास जाते हैं तो पहले उससे सलाम करते हैं तो इसी तरह मस्जिद में दाखिल होने पर इन दो रकातों के जरिये मस्जिद को सलाम पेश करते हैं।

तहैयतुल मस्जिद वाजिब है या सुन्नत है या मुस्तहब? इस बारे में फेक़्ही मतों का दृष्टिकोण जानने से पहले उन स्पष्ट हदीसों पर एक नज़र डालें जो इस सिलसिले में हदीस की किताबों में मौजूद हैं ताकि इन हदीसों के शब्दों से हुक्म तक पहुंचना आसान हो।

अबू क़तादा अंसारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जब तुम में से कोई शख्स मस्जिद में दाखिल हो तो बैठने से पहले दो रकात नमाज़ पढ़ ले'' (बुखारी ४६, ११६४, मुस्लिम ७१४, अबू दाऊद ४६७, तिर्मिज़ी ४१६ नेसई ७३० इब्ने माजा १०१३ दार्मी १४३३, मुवत्ता इमाम मालिक ४४७, अहमद २२५२३)

सहीह मुस्लिम की एक रिवायत में यह इज़ाफा है अबू क़तादा कहते हैं।

''मैं मस्जिद में दाखिल हुआ उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों के बीच बैठे हुए थे तो मैं भी बैठ गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम्हें बैठने से पहले दो रकात नमाज़ पढ़ने से किस चीज़ ने रोका था? मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने देखा कि आप बैठे हुए हैं और लोग भी बैठे हुए हैं तो मैं भी बैठ गया आप ने फरमाया जब तुम में से कोई शख्स मस्जिद में दाखिल हो तो जब तक दो रकात पढ़ न ले न बैठे''

इमाम तिर्मिज़ी इस रिवायत को ज़िक्र करने के बाद फरमाते हैंः

''इस सिलसिले में जाबिर, अबू उमामा, अबू हुरैरा, अबू ज़र और काब बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हुम से भी रिवायत है।''

अबू क़तादा के अलावा इस हदीस की रिवायत इब्ने माजा में अबू हुरैरा से सहीह सनद से आई है। (हदीस नंबर-१०१२)

अगर कोई शख्स जुमा के दिन उस वक़्त मस्जिद में दाखिल हो जब इमाम खुतबा दे रहा हो तो भी उसे दो रकात पढ़ कर ही बैठना चाहिए।

जाबिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि जुमा के

दिन एक आदमी दाखिल हुआ और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुतबा दे रहे थे तो आप ने इस शख्स से पूछा कि क्या तुम ने नमाज़ पढ़ ली उसने कहा नहीं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा दो रकात नमाज़ पढ़ो। (बुखारी ९३१ मुस्लिम ८७५ अबू दाऊद १९५ तिर्मिज़ी ५१० नेसई १४०० इब्ने माजा ११२ दारमी १५९६ मुसनद अहमद १४१७१

इस हदीस में इस नमाज़ का हुक्म इतना ताकीदी है कि जुमा के खुतबे के दौरान मस्जिद में दाखिल होने वाले को भी तहैयतुल मस्जिद पढ़े बगैर बैठने से मना किया गया है हालांकि उसको जुमा का खुतबा सुनना है बल्कि उसे बैठने के बाद भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि उठकर तहैयतुल मस्जिद पढ़े।

इन तमाम तालीमात के बाद फेक़्ही मजाहिब में इसे सुन्नत या मुस्तहब का दर्जा दिया गया है और इसके लिये अपने अपने तौर पर दलीलें दी गई हैं।

सारांश यह है कि इस को वाजिब न मानने वाले भी इसे सुन्नते मुवक्कदा मानते हैं। बहरहाल वाजिब और सुन्नत की इस बहस में पड़े बगैर इस ताकीदी हुक्म पर अमल और अमल की तरगीब की ज़रूरत है। सुन्नत को जिन्दा करने, हदीस के प्रचार और हदीस पर अमल जिस जमाअत की विशिष्टता है उस जमाअत के लोगों को इस जानिब विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। जुमा के खुतबों में और मस्जिद व मदर्सों के पठन-पाठन में इसी तरह अन्य सभाओं में तहैयतुल मस्जिद के बारे में बयान होना चाहिए साथ ही अमल के जरिये इस को व्यवहारिक रूप में लाने की कोशिश करनी चाहिए।

शैख़ इब्ने बाज़ रह० एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं:

''ईदुल फित्र और ईदुल अज़हा की नमाज़ जब मस्जिद में पढ़ी जाए तो ईदैन के लिये आने वाले को तहैयतुल मस्जिद पढ़ना मश्रूअ है अगर्चे ममनूअ (निषिद्ध) वक़्तों ही में क्यों न हो क्योंकि यह सबबी नमाज़ है और अल्लाह के रसूल की यह हदीस साधारण है कि जब तुम में से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो दो रकात नमाज़ पढ़े बगैर न बैठे हां अगर ईद की नमाज़ ईदगाह में पढ़ी जाए तो इससे पहले कोई नमाज़ पढ़ना मश्रूअ नहीं है... (मजमूअ फतावा अश-शैख इब्ने बाज रह० १३/१५)

इसी तरह का जवाब शैख अबदुल्लाह बिन जिबरीन से भी बयान किया गया है (फतावा इब्ने जिबरीन)

शैख सालेह बिन फौज़ान का भी यही फतवा है।

फतावा असूहाबुल हदीस (हाफिज़ अब्दुस्सत्तार अलहम्माद) भाग २ पृष्ट १३२ में है:

हां अगर किसी सबब के आधार पर ईद की नमाज़ मस्जिद में पढ़ी जाए तो वहां तहैयतुल मस्जिद पढ़ी जा सकती है।

लेख का सारांश:

१. मस्जिद में आने के बाद बैठने से पहले दो रकात तहैयतुल मस्जिद पढ़ने का ताकीदी हुक्म है।

२. जुमा के खुतबे के दौरान आने वाले को भी तहैयतुल मस्जिद पढ़कर ही बैठना चाहिए।

३. मकरूह वक़्त में तहैयतुल मस्जिद पढ़ी जा सकती है।

४. अगर किसी वजह से ईद की नमाज़ मस्जिद में पढ़नी हो और नमाज़ के लिये मस्जिद में जाने के बाद नमाज़ से पहले बैठने की नौबत हो तो तहैयतुल मस्जिद पढ़ कर ही बैठेंगे।

५. ईद की नमाज़ के मौके पर तहैयतुल मस्जिद के तौर पर पढ़ी जाने वाली नमाज़ का तअल्लुक ईद की नमाज़ से नहीं बल्कि मस्जिद से है।

दूध की बरकत

क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान सलमान मंसूरपूरी

पानी के बाद जिस चीज़ की अहमियत है वह दूध है शबे मेराज की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने दूध और शराब के प्याले आस्मान पर पेश किये गये और हुज़ूर (पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने इन में से दूध को पसन्द फरमाया और जिबरईल अलैहिस्सलाम ने यह दृष्य देखकर कहा कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फितरत को पसन्द किया इसी लिये इस्लाम को भी दूध के साथ तश्बीह (ऊपमा) दी जाती है।

इन्सान का हर बच्चा शराब से नहीं बल्कि दूध से पलता है इससे साबित होता है कि दूध इन्सानी फितरत का राज़दार है।

इमाम बुख़ारी रह० ने एक अध्याय बांधा है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथियों की गुज़रान का क्या हाल था। इस अध्याय में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हदीस बयान की है जो पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार का भी प्रतीक है और यह हकीकत भी स्पष्ट करती है कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जिन्दगी इस दुनिया में कितनी तपस्या से भरपूर थी।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि भूक की वजह से कभी ऐसा होता कि मैं जिगर को थाम कर ज़मीन पर गिर जाता कभी ऐसा होता कि पेट पर पत्थर बांध लेता एक दिन ऐसा हुआ कि मैं बीच राह में आ कर बैठ गया जहां से लोग आया जाया करते थे। अबू बक्र रज़ियल्लाहो अन्हो आए और मैंने उनसे कुरआन की एक आयत के बारे में पूछा मेरा मकसद यह था कि शायद वह मुझे कुछ खिला पिला देंगे। वह यूं ही चले गये। फिर उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो आए उनसे भी एक आयत का मतलब पूछा मकसद वही था कि कुछ खाने को देंगे वह भी यूं ही चले गये इतने में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आये मुझे देख कर मुस्कुराए, मेरे चेहरे को ताड़ लिया फरमाया अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहो अन्हो) साथ साथ चले आओ मैं पीछे पीछे हो लिया। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर में गये। वहां हुजूर ने प्याले में दूध देखा घर वालों ने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उस शख्स का नाम बताया जिसने दूध का उपहार भेजा था। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमाया अबू हुरैरह जाओ अहले सुफ्फा को बुला लाओ। अहले सुफ्फा वह लोग होते थे जिनका कोई घर बार न होता जिनको किसी शख्स का सहारा न होता यह इस्लाम के मेहमान होते। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तरीक़ा यह था कि कोई सदक़ा आता तो सबका सब अहले सुफ्फा

को दे देते थे और उपहार आता तो उनको अपने साथ शामिल कर लेते थे।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने समझा कि अहले सुफ्फा में इस दूध की हक़ीक़त क्या होगी अगर मुझे मिल भी जाता, मुझ में कुछ सकत आ जाती। अब देखिए इसमें से कुछ मिलता भी है या नहीं, यही ख्यालात थे और अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन के बगैर कोई चारा भी नहीं था, मैं सब को बुला लाया। आ कर बैठ गये मुझ से रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अबू हुरैरह! यह प्याला लो और सबको पिलाओ मैंने प्याला ले लिया हर एक को देता जाता था जब एक शख्स पीकर सैराब हो जाता तब मैं दूसरे को वही प्याला देता था इस तरह से सबने जी भर कर पी लिया। मैंने आखिर में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने प्याले को पेश कर दिया हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस प्याले को लेकर अपने मुबारक हाथ में रख लिया मुझे देखा और मुस्कुराए फरमायाः अब तो मैं रह गया और तुम रह गये। मैंने कहा हुजूर सच है फरमाया अब तुम पी लो, मैंने बैठकर दूध पी लिया फरमाया और पियो मैंने और पिया फिर हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यही फरमाते रहे पियो पियो। आखिर में मैंने कहाः कसम है उस ज़ात की जिसने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हक़ के साथ भेजा है अब तो गुंजाइश बिलकुल नहीं रही फरमायाः लाओ, मैंने प्याला पेश कर दिया। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह का शुक्र अदा किया बिस्मिल्लाह पढ़ी और प्याला खतम कर दिया (बुखारी किताबुर्रिक़ाक)

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैगम्बर होने की निशानी देखिए कि हर एक शख्स ने जी भर कर दूध पिया और प्याला भरा का भरा रह गया अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो ने इतना पिया कि उनको कहना पड़ा कि अब गुंजाइश ही नहीं रही।

क्या कोई समझ सकता है कि इस प्याले को कोई बड़ी सी बड़ी संख्या खतम कर सकती थी, लाख होते तो क्या और दस लाख होते तो क्या, सभी इससे सैराब (पेट भर) सकते थे इस प्याले को ख़तम करने की ताक़त भी उसी (अल्लाह) में थी जिस की बरकत से वह चीज़ सब के लिये पर्याप्त और काफी हो गयी थी।

हदीस पर दुबारा गौर करो कि प्याला हाथ में लेकर अल्लाह की प्रशंसा की यही वह चीज़ है जो पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा की आत्मा है।

संभव है कि नबी के अलावा कोई ऐसे अजूबा को देख कर अपनी बड़ाई व महानता का ख्याल कर बैठे। संभव है कि कोई शख्स इसे निजी कमालात में गिनने लगे। मगर अल्लाह का सन्देशवाहक हर वक़्त अपने स्वामी व सर्वशक्तिमान को याद किया करता और सभी उपहार और तोहफे को उसी की तरफ से करार दिया करता था जिस की रूबूबियत (ईश्वरत्व और खुदाई) इसी शक्ल में प्रकट होती थी।

हिजरत के सफर में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गुज़र

उम्मे माबद आतिका बिन्ते खालिद बिन खलीद खुजाइया के खेमे पर हुआ यह औरत वयोवृद्ध थी और खेमे के सामने बैठी रहती थी। आये गये को पानी पिलाती, खुजूर वगैरह भी बेच दिया करती थी उस वक़्त नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अबू बक्र सिददीक़ रज़ियल्लाहो अन्हो थे जो हुजूर के साथ पीछे सवार थे दूसरी सवारी पर आमिर बिन फुहैरा रज़ियल्लाहो अन्हो थे या इब्ने अरीक़त था जो इस राह से परिचित था और उसे मुआवज़े पर साथ ले लिया गया था। यह मुबारक काफिला इस खेमे के पास सुस्ताने आराम के लिये ठेहर गया था। बुढिया से पूछा गया कि उनके पास कुछ खाने के लिये है वह बोली नहीं, अगर कुछ होता तो मैं स्वयं ही पेश कर देती। उन दिनों सख्त अकाल पड़ा हुआ था।

उम्मे माबद के भाई जैश बिन खालिद का बयान है कि खेमा में एक दुबली पतली बकरी खड़ी हुई थी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बकरी के बारे में पूछा तो उम्मे माबद ने जवाब दिया कि यह बहुत कमजोर है। रेवड़ के साथ नहीं चल सकती इस लिये यहीं रह गयी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि अगर इजाज़त हो तो हम इसका दूध दुह लें वह बोली कि अगर आप को दूध नज़र आता हो तो दुह लीजिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि एक बड़ा बरतन लाओ फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिस्मिल्लाह कह कर बकरी का दूध दूहना शुरू किया बर्तन भर गया सब को पिलाया फिर दूध निकाला बरतन भर गया फिर सबको पिलाया गया। आख़िर में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पिया, तीसरी बार दूध निकाला और घर वालों के लिये छोड़ दिया गया।

ईश्दौत्व की निशानी ने दूध पिलाया और पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नैतिकता ने भी अपना चमत्कार दिखाया कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहयात्रियों को पहले खूब पिलाते हैं और स्वयं कप से बाद में पीते हैं और घर वालों के लिये काफी मात्रा में दूध छोड़ते हैं। ''रहमातुल लिल आलमीन'' से पृष्ठ १४६-१५२

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइल नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस **मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6**

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

इस्लाम को समझने के लिए वैचारिक उदारता और मानसिक विस्तार की ज़रूरत है

डा० मुक़्तदा हसन अज़हरी

सियासी मामलात में इस्लाम ने किसी ख़ास प्रकार की व्यवस्था की वकालत नहीं की है उसकी नज़र में यह विभाग मानव-सेवा का एक विस्तारित मैदान है जो लोग सियासत (राजनीति) में उतरें उनका फर्ज़ है कि वह प्रजा की सेवा को अपने हितों पर प्राथमिकता दें इसी लिये इस्लाम ने पद चाहने वालों को पद देने से मना किया है। वह कहता है कि मश्वरा से ऐसे शख्स को पद देना चाहिए जो इस के लिये सक्षम और योग्य हो और उसके दिल में अल्लाह का भय हो। इस्लाम पद की प्राप्ति का समर्थक नहीं है।

आर्थिक व्यवस्था के बारे में इस्लाम की शिक्षा यह है कि क्रय-विक्रय और लेन देन के तमाम मामलात का सूद, धोका, ख्यानत और शोषण वगैरा खराबियों से पवित्र होना ज़रूरी है।

इस्लाम भीक मांगने का भी सख्त विरोधी है इसी लिये उसने व्यवपार, दस्तकारी और मेहनत व मजदूरी के तमाम कामों का प्रोत्साहन किया है और सिर्फ उन सूरतों से मना किया है जिस में किसी हराम काम का पहलू हो।

इस्लाम की न्यायिक व्यवस्था भी दूसरी व्यवस्थाओं की तरह बेहद ठोस और व्यापक है। इस्लाम ने जज के पद को बहुत नाजुक और महत्वपूर्ण क़रार दिया है और काफ़िरों (जजों) को सख्ती से आदेश दिया है कि वह किसी भी हाल में इन्साफ के सिद्धांतों का उल्लंघन न होने दें। कुरआन में इस बात पर बहुत बल दिया गया है कि फैसले में इन्साफ की पाबन्दी ज़रूरी है। मामला चाहे अपने आदमी का हो या किसी अंजान का। इसी तरह न्यायिक मामले में गवाही को अहमियत दी गयी है झूठी गवाही पर सख्त सज़ा की चेतावनी है और इसे महा पाप बताया गया है। मुक़दमात में मामलात को गलत दिशा देने के लिये रिश्वत के लेन देन पर भी जहन्नम की चेतावनी दी गई है। जजों को उनकी जिम्मेदारी की बारीकी का एहसास दिलाने के साथ ही इस्लाम ने दोनों पक्षों को भी आदेश दिया है कि अदालत के गलत फैसले से अगर कोई हक़ उन्हें मिल जाए गा तो वह परलय के दिन अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकेंगे। स्वयं पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी अपने फैसले के संबन्ध में यह स्पष्टीकरण दिया कि मेरे फैसले के सहारे गैर पात्र शख्स अगर कोई चीज़ ले लेगा तो यह उसके लिये जहन्नम की आग बन जाएगी। सहीह हदीस में है कि आप के इस प्रवचन को सुन कर मुक़दमा पेश करने वाले दोनों पक्षकार रोने लगे और अपनी अपनी मांगों से हट गये। इस्लाम के सबसे बड़े जज स्वयं पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे आप के सामने जब कुरैश कबीले की एक औरत के चोरी

करने का मामला पेश हुआ तो बाज लोगों ने कबीले की प्रतिष्ठा का लिहाज करते हुए चाहा कि इसे मआफ कर दिया जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिफारिश (अनुशंसा) सुन कर गुस्सा हो गये और मामले की अहमियत का एहसास दिलाते हुए फरमाया कि अगर मेरी लड़की के खिलाफ भी चोरी का जुर्म साबित हो जाए तो मुझे उसका हाथ काटने में कोई संकोच और असमंजस नहीं होगा। इतिहास ने हर काल में इस्लाम की व्यवस्था की बरकत को देखा है और आज भी अगर इस व्यवस्था की पाबन्दी की जाए तो मानव समाज अपनी बहुत से उलझनों से छुटकारा पा सकता है।

जो लोग इस्लाम पर आपत्ति का जेहन बना लेते हैं उनकी निगाहें केवल उनही मामले पर ठेहरती हैं जिन से इस्लाम के खिलाफ कुछ कहने की कुछ गुंजाइश हो वर्ना पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जमाने से आज तक के मुस्लिम शासन के इतिहास पर नज़र डालिए तो आप को अनगिनत ऐसे वाक़आत नज़र आएं गे जिन से इस्लाम के न्याय, प्रजा पालन और उदारता साबित हो गी। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का के मुश्रिकीन ने १३ साल तक जिस तरह दुख पहुँचाया था और आप के साथ दुष्टता की थी इससे इतिहास का हर विद्यार्थी परिचित है। उनके दुख पहुंचाने के कारण पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का छोड़ कर मदीना चले गये थे लेकिन आठ साल बाद जब आप ने मक्का पर विजय पा लिया और बड़े बड़े मुजरिमीन आप के सामने पेश किए गये तो आपने उन सब को मआफ कर दिया जब कि उन में से हर एक अपने पूर्व व्यवहार की वजह से यह विश्वास किये हुए था कि आज छुटकारा पाना कठिन है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाओ तआला अन्हो के इन्साफ और आप की सियासत व शासन शैली की पूरी तारीख में मिसाल दी जाती है। बैतुल मकदिस के सफर में हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने ईसाइयों के गिरजे से बाहर नमाज़ अदा की और फरमाया कि अगर मैं अन्दर नमाज़ पढ़ लेता तो संभव है कि कल कोई मुसलमान यह दावा करता कि अमीरूल मोमिनीन ने यहां नमाज़ अदा की थी इस लिये हम इसे मस्जिद बनाएंगे।

इसी तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने मदीने में एक बूढ़े शख्स को भीख मांगते हुए देखा पूछने पर मालूम हुआ कि यहूदी है। पूछा कि भीख (भिक्षा) मांगने की वजह कया है? उसने जवाब दिया कि घर का खर्च चलाना है और जिज़या अदा करना है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो उसका हाथ पकड़ कर अपने घर ले गये और जो कुछ मौजूद था उसे दे दिया फिर बैतुल माल के खाज़िन (कोषाध यक्ष) को लिखा कि इसके लिये और इस तरह के दूसरे मजबूरों के लिये बैतुल माल (सरकारी खज़ाने) से वज़ीफ़ा तय कर दो यह न्याय की बात नहीं है कि जवानी में हम इससे जिजया की रक़म लें और बुढ़ापे में इसे दरबदर की ठोकर खाने के लिये छोड़ दें।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मिस्र के गवर्नर थे उनके लड़के महुम्मद का एक किबती मिसरी से घुड़दौड़ के मसले पर झगड़ा हो गया गवर्नर के

बेटे मुहम्मद ने किबती को कोड़े से मार दिया। किबती ने कहा कि मैं अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से शिकायत करूंगा। गर्वनर के बेटे मुहम्मद ने जवाब दिया कि तुम्हारी शिकायत का मुझे कोई डर नहीं है मैं प्रतिष्ठित मां बाप का बेटा हूं यह सुन कर किबती मुकदमे के लिये मदीना पहुंचा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से घटना का विवरण बताया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मिस्र से बाप बेटे को बुलवाया और बयान लेने के बाद फैसला सुनाते हुए किबती को कोड़ा दिया और फरमाया कि प्रतिष्ठित बाप के बेटे को उसी तरह मारो जिस तरह उसने तुम को मारा था। फिर हज़रत अम्र बिन आस को संबोधित करते हुए फरमाया कि मां के पेट से आज़ाद पैदा होने वालों को तुमने किस दलील के आधार पर गुलाम मान लिया है?

इस्लामी इतिहास में अगर इस प्रकार की घटनाएं घटित हो चुकी हैं तो फिर इन का संदर्भ क्यों नहीं दिया जाता और उनसे शासन का जो उच्च आदर्श स्थापित हुआ इस का सेहरा मुसलमानों के सर क्यों नहीं बाँधा जाता? क्या मुसलमानों पर सख्ती और तंगनजरी (संकीर्णता) का आरोप लगाने वाले ऐसा करते हुए स्वयं तंग नजरी का शिकार नहीं हो जाते?

अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन की एक लम्बी सूरत को औरतों के नाम उल्लिखित किया है और इस सूरह की पहली आयत में इस हक़ीक़त का इज़हार किया है कि मर्द और औरत दोनों की पैदाइश एक जान अर्थात आदम अलैहिस्सलाम से हुई है। पैदाइश में बराबरी के इस एलान के बाद कुरआन ने स्पष्ट किया है कि मर्द और औरत में से जो भी अच्छा कर्म करेगा उसे इसका पूरा पूरा पुण्य मिलेगा। धार्मिक मामलात में समता के बाद फरमाया कि औरतों के साथ अच्छा व्यवहार करो क्रय विक्रय में इस्लाम में नारी के अधिकार को स्वीकार किया है और पति के साथ रहते हुए उसे माल के स्वामित्व और इसमें से खर्च करने का अधिकार दिया है ज्ञान सीखने और सिखाने की भी नारी को इजाज़त दी है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में आप की बीवियों ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जिस तरह ज्ञान सीखा और सहाबा को सिखाया इसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिल सकता। अरब समाज में औरतों की इस हद तक नाकदरी थी कि लड़कियों को ज़िन्दा दफन कर दिया जाता था और लड़की की पैदाइश पर घर में निराशा पैदा हो जाती थी। लेकिन इस्लाम ने लड़की की पैदाइश को भलाई और बर्कत करार दिया और ज़िन्दा दफन करने की रस्म को बिल्कुल खतम कर दिया।

इस्लाम के बारे में जिन यथार्थ को मैंने पेश किया है वह सिर्फ उदाहरण हैं अगर विस्तार से देखें तो इस्लाम के हर आदेश में आप को मानवता के सम्मान और कल्याण का पहलू नज़र आएगा और ऐसा इस लिये है कि यह व्यवस्था किसी इन्सान के दिमाग का नहीं बल्कि उस अल्लाह की उतारी हुई है जिसने इन्सान को और इस पूरे संसार को पैदा किया है जिस में हम अपनी आशाओं और हौसलों की पूर्ति कर रहे हैं। इस लिये इस्लामी शिक्षाओं को पढ़ कर कोई राय स्थापित करें।

(जरीदा तर्जुमान २४/२/१९९५, लेख का आंशिक भाग)

''काहिली की निन्दा''

शफी मुहम्मद एडवोकेट

''काहिली की निन्दा'' में मौलाना हाली ने काहिल और निकम्मे लोगों को फटकार लगाई है निकम्मे लोग काम न करने के जो बहाने बनाते हैं उनको हाली ने रदद कर दिया है। दुनिया में जो भी तरक्की नज़र आ रही है दीनी हो या दुनियावी इसमें मेहनत व मशक़्क़त का रहस्य निहित है। सुस्त व काहिल इन्सान न अपना भला कर सकता है और दूसरों का, सुबूत के तौर पर हाली की गद्य से चन्द कविताएं सेवा में प्रस्तुत हैं।

अगर हैं तही दस्त और बे नवा वह
तो मेहनत से हैं जी चुराते सदा वह
नसीबों का करते हैं अकसर गिला वह
हिलाते नहीं कुछ मगर दस्त व पा वह
अगर भीख मिल जाए किसमत से उनको
तो सौ बार बेहतर है मेहनत से उनको
न हिम्मत कि मेहनत की सख्ती उठायें
न जुरअत कि खातरों के मैदां में आएं
न गैरत कि ज़िल्लत से पहलू बचाएं
न इबरत कि दुनिया की समझें अदाएं
न कल फिक्र था यह कि हैं इसके फल क्या
न है आज परवा कि होना है कल क्या
न असबाबे राहत की उनको खबर कुछ
न आसारे दौलत की उनको खबर कुछ
न इबरत व ज़िल्लत की उनको खबर कुछ
न कुलफत व राहत की उनको खबर कुछ
न आगाह इससे कि हस्ती है शय क्या
न वाकिफ कि मक़सूद हस्ती से है क्या
कभी कहते हैं जहर है माल व दौलत
उठाते हैं जिसके लिये रंज व मेहनत
इसी से गुनाहों की होती है रग़बत

इसी से दिमागों में आती है निख़्वत
यही हक़ से करती है बन्दों को गाफिल
हुए हैं अजाब इस से कौमों पर नाज़िल
निकम्मों के हैं यह सब दिल कश तराने
सुलाने को किस्मत के रंगीन फसाने
इसी तरह के करके हीले बहाने
नहीं चाहते दस्त व बाजू हिलाने
वह भूले हुए हैं यह आदत खुदा की
कि हरकत में होती है बरकत खुदा की

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

(प्रेस रिलीज़)

देश के विभिन्न स्थानों में सैलाब से जानी व माली नुक़सानात पर रंज व ग़म का इज़हार और सहयोग की अपील.

दिल्ली २७ जुलाई २०२१

देश के विभिन्न स्थानों विशेष रूप से महाराष्ट्र और बिहार आदि के बाज़ ज़िलों में गैर मामूली बारिश की वजह से सैलाब की अबतर स्थित और इसके परिणाम में होने वाले भारी जानी व माली नुकसानात सख्त रंज व गम का कारण हैं और इस मुसीबत की घड़ी में सब ही से इन्सानियत के नाते सहयोग की अपील है। इन ख्यालात का इज़हार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने अख़बार के नाम जारी अपने एक बयान में किया है। सम्माननीय अमीर ने प्रभावितों से हमदर्दी एवं संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि मुसीबत ग्रस्त एलाकों विशेष रूप से महाराष्ट्रा में बारिश रूकने का नाम नहीं ले रही है और तबाही बढ़ती जा रही है इसलिये वह सब्र और संयम का दामन थामे रहें और आपसी भाई चारा और आपसी सहयोग का विशेष ख्याल रखें। इसके अलावा राष्ट्र व समुदाय के शुभचिंतकों से बिना धर्म के अन्तर के अपील की है कि वह मुसीबत की इस घड़ी में मानवता के रिश्ते को निभाते हुए अपने भाइयों की भरपूर मदद करें। इसी तरह राज्य एवं केन्द्र सरकारों से मांग की है कि प्रभावितों को राहत पहुंचाने, पुनर्वास और नुकसानात के मुआवजे के सिलसिले में उचित इकदामात करें। इसमें किसी तरह की कोताही न बर्ती जाए और प्रशासन को पूरी तरह चौकस कर दिया जाए।

मर्कज़ी जमीअत ने मुसीबत की इस घड़ी में प्रभावितों के लिये दुआ और तमाम भाइयों विशेष रूप से अपनी तमाम राज्य इकाइयों के पदधारियों से उनके सहयोग के लिये अपने अपने राज्यों से भपरूर सहयोग की अपील की है। सम्माननीय अमीर ने कहा कि इतने बड़े पैमाने पर जान व माल की तबाही व बर्बादी प्राकृतिक व्यवस्था का भाग है और इस तरह की प्राकृतिक आपदाएँ ज़मीन पर बसने वाले हम इन्सानों के पापों के साधारण हो जाने की वजह से ही आती हैं और इस तरह अल्लाह तआला सँभलने के लिये कभी कभी अपनी निशानियाँ ज़ाहिर करता है और अपने बाज़ बन्दों को आज़माता है इस लिये इस से बन्दों को इबरत हासिल करनी चाहिए और सब्र व एहतिसाब (आत्मनिरीक्षण) से काम लेना चाहिए और विश्व स्तर पर जहाँ भी लोग तरह-तरह की परेशानियों में लिप्त हैं सबके लिये अल्लाह से आफियत की दुआ करनी चाहिए और सहयोग में जहाँ तक संभव हो हिस्सा लेना चाहिए।

❑ ❑ ❑

(प्रेस रिलीज़)

आज़ादी की नेमत की कद्र और हिफाज़त करना हम सब की ज़िम्मेदारी है: मौलाना असग़र अली इमाम महदी सफली

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की उच्च शैक्षिक व प्रशिक्षणिक संस्था अल माहदुल आली लित-तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन एवं ध्वजारोहण

दिल्ली १६ अगस्त २०२१

आज स्वतंत्रता दिवस है और पूरा हिन्दुस्तान आज़ादी के जश्न से परिपूर्ण और मग्न है। मैं तमाम देश वासियों को इस राष्ट्रीय त्यौहार की हार्दिक बधाई पेश करता हूं। आज़ादी कौमों की ज़िन्दगी की सबसे बुनियादी चीज़ है और सबसे बड़ी चीज़ भी। आज़ादी न हो तो इन्सान हक़ीक़त में जानवरों से बदतर हो जाता है। इन्सान चाहे जितना कमज़ोर हो या जितना भी छोटा हो और चाहे जितना भी वह कम पढ़ा लिखा हो पैदाइशी तौर पर उसे आज़ाद बनाया गया है और अल्लाह ने उसे आज़ादी दी है। इन्सान अल्लाह की धरती पर अल्लाह की उपासना, उसकी गुलामी, उसके अधीन और उसके आज्ञापालन का पाबन्द है और यही चीज़ उसको दुनिया के लोगों की गुलामी से छुटकारा दिलाती है और आखिरत (मरने के बाद वाले जीवन) में सफलता देती है जो लोग अल्लाह की बन्दगी को दिल की गहराइयों और अमल की सच्चाइयों से साबित करते हैं वही वतन की आज़ादी के लिये निस्वार्थता त्याग एवं बलिदान प्रस्तुत करके अपने वतन को गैरों की गुलामी से आज़ाद कराते हैं और उसकी हिफाज़त के लिये तन मन धन की बाज़ी लगाते हैं। बिना धर्म व समुदाय के अन्तर के हमारे पूर्वजों और पुर्खों ने राष्ट्रीय एकता और निरन्तर संयुक्त संघर्ष से देश को आज़ाद कराया और उसके निर्माण एवं विकास में आखिरी दम तक लगे रहे और आज हम इस कुर्बानी को याद करके इसी संकल्प को दोहराने के लिये एकटठा हैं और यही पैग़ामे मुहब्बत है जहां तक पहुंचे। यह उदगार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने व्यक्त किये। अध यक्ष महोदय कल (१५ अगस्त) को मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षणिक संस्था अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया अहले हदीस कम्पलैक्स अबुल फज़ूल इन्कलेव ओखला नई दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह पर यथापूर्व ध्वजारोहण के बाद प्रतिभाग लेने वालों को संबोधित कर रहे थे।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि सहीह अर्थों में वही लोग आज़ादी की हकीकतों को समझते हैं जो आज़ादी के लिये प्रयास करते हैं आज़ादी के लिये कुर्बानियां देते हैं और अल्लाह के बन्दों को लोगों की गुलामी और जकड़ बन्दी से निकाल कर अल्लाह की बन्दगी से जोड़ते और उसकी विस्तार धरती पर आज़ादी के वातावरण में उसकी इबादत के लिये ला खड़ा करते हैं जो अल्लाह पर विश्वास रखते हैं और जिन्हों ने उसकी गुलामी को कुबूल कर लिया है। इसी लिये आप देखेंगे कि हिन्दुस्तान जब गुलामी की तरफ पहला क़दम रख रहा था तो उस वक़्त के ओलमा विशेष रूप से भारतीय मुसलमानों के मार्गदर्शक शाह वलीउल्लाह मुहदिदस देहलवी रह० आगे आये और सरकार व जनता को इस फितने से आगाह किया और बाद के दिनों में इस खानदान की महत्वपूर्ण शख्सियत शाह मुहम्मद इसमाईल शहीद रह० और इनके बाद सादिकपुर के स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वतंत्रता संग्राम का तत्वाधान किया और जब तक देश आज़ाद न हो गया तन के गोरे और मन के काले अंग्रेज़ों को देश निकाला देने के लिये यह सरफरोश स्वतंत्रता सेनानी जान व माल की बहुमूल्य कुर्बानियां पेश करते रहे जिस का उल्लेख डा० तारा चन्द, डब्लू, डब्लू हिन्टर और मौलाना गुलाम रसूल महर जैसे इन्साफ पसन्द इतिहासकारों ने किया है।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि १८५७ ई० में बहरहाल बहादुर शाह जफर के तत्वाधान में अंग्रेज़ों के खिलाफ जो कुव्वत एकजुट हुई थी और उस वक़्त स्वतंत्रता सेनानियों में काफी जोश था। मेरठ से जनरल बख्त का जो काफिला चला था वह इसी तहरीके शहीदैन अर्थात अहले हदीसों के मुजाहिदीन (स्वतंत्रता सेनानी) थे जिन्होंने सबको एकटठा किया था और ''हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आपस में सब भाई भाई'' का ना-र-ए मस्ताना लगाया था और सारे हिन्दुस्तानी बहुत बड़ी तादाद में बहादुर शाह ज़फर के तत्वाधान में एकटठा हो गये थे लेकिन बहादुर जफर के साथ जिस तरह से लोग जमा हुए थे अगर थोड़ी देर सब्र करके और उसके जवान, उस के रंगरूट, उसके फौजी और सिपाही थोड़ सा होश से काम लिये होते और कुछ अवाम के अनुचित तसर्रूफात और शोरिश पर कन्ट्रोल पा लिये होते और आपसी डिसीपिलिन स्थापित करने में कामयाब हो जाते तो हिन्दुस्तान कभी भी गुलामी की जंजीर में नहीं जकड़ता। इन तमाम हालात में आज़ादी के इस जश्न को मनाते हुए हम अगर इन कुर्बानियों को याद करना चाहते हैं और सहीह अर्थों में इस कुर्बानी के सहीह परिणाम व बरकात हासिल करना चाहते हैं और इसका फल सहीह तरीक़े से खाना चाहते हैं तो हमें आपसी भाई चारा, राष्ट्रीय एकता और मानवीय भाई चारा को बढ़ावा देना होगा, हर तरह के भौगोलिक भेदभाव, ऊंच नीच, भेदभाव को मिटाना होगा और ''हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आपस में सब भाई भाई'' का ना-र-ए मस्ताना लगाना ही नहीं बल्कि अपने अन्दर इस आज़ादी की आत्मा की पुनः प्राप्ति भी करनी होगी जिससे हमारे प्रतिष्ठित स्वतंत्रता सेनानी सरशार थे। अमीर महोदय ने अपने

सम्बोधन में तमाम देशवासियों को बधाई दी, देश में अम्न व समृद्धि, आपसी मेल जोल और भाई चारा के लिये दुआ की और जोर देकर कहा कि आइये हम संकल्प करते हैं कि अल्लाह के प्रदत्त इस भूभाग प्रिय देश के जो अधिकार हम पर हैं उनको आखिरी सांस तक अदा करते रहें गे और अपने देश, अपने देशवासियों और पूरी मानवता की भलाई के लिये हम इस झण्डे को सदा फहराते रहेंगे और सदा ऊंचा रखने की कोशिश करते रहेंगे, अपने दीन, और ईमान व इस्लाम के तक़ाज़ों को अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार पूरा करेंगे और अपने अपने अधिकार को मनवाने और हासिल करने से ज़्यादा अपने आज़ाद देश का हक़ अदा करने और अपने अन्य भाइयों के अधिकारों का पास व लिहाज़ रखने और उसको अदा करने का भरपूर जतन करेंगे एक सुगम माहौल में देश के निर्माण एवं विकास के साथ हम सब ऊचाइयों पर पहुंचने में सफल होंगे।

इस अवसर पर अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया के जिम्मेदारान व अध यापक, कार्यकर्तागण और अन्य जिन सज्जनों ने शिर्कत की उन में मौलाना मुफती जमील अहमद मदनी, डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, इंजीनियर कमरूज़्ज़मां वगैरह उल्लेखनीय हैं। ध्वजारोहण के बाद राष्ट्रीय तराने भी गाये गये और खुशी के इस अवसर पर मिठाई बांटी गई।

जारी कर्ता
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस
हिन्द

प्रेस रिलीज़

मुहर्रमुल हराम का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली ६ अगस्त २०२१

आज दिनांक २६ जुल हिज्जा १४४२ हिजरी अनुसार सोमवार ६ अगस्त २०२१ को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस मंज़िल स्थित उर्दू बाज़ार जामा मस्जिद दिल्ली में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी की एक अहम बैठक आयोजित हुई और मुहर्रमुल हराम महीने के चाँद की रूयत के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों के जिम्मेदारों, मिल्ली संगठनों और विभिन्न रूयते हिलाल कमेटियों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये लेकिन देश के अधिकांश भागों में बदली होने की वजह से मुहर्रमुल हराम के चांद की रूयत (देखने) की कोई विश्वसनीय खबर नहीं मिली अतः मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली ने यह फैसला किया है कि कल १० अगस्त २०२१ मंगल के दिन जुल हिज्जा की ३०वीं तारीख होगी। इन्शाअल्लाह

जारी कर्ता
मर्कज़ी अहले हदीस
रूयते हिलाल कमेटी

नवास बिन समआन रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नेकी अच्छी आदत है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और लोगों को इस गुनाह की खबर होना तुम्हें नापसन्द हो। (मुस्लिम २५५३)

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए
मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के पिरणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध ा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

कामयाबी की राह

नौशाद अहमद

असफलता की असल वजह गफलत, लापरवाही और बेहिस्सी होती है, जब तक अपनी नाकामियों और कोताहियों को खुले मन से स्वीकार और एतराफ न किया जाए, तो यह समझ लेना चाहिए, कि हम भविष्य में विकास की राह में एक भी क़दम नहीं बढ़ सकते, यह एक सच्चाई है जिस को हर हाल में मानना पड़ेगा। इतिहास का अध्ययन करने के बाद यह हकीकत दो दो चार की तरह बिलकुल स्पष्ट हो जाती है।

यह बड़े ही अफसोस और चिंता की बात है कि हम अपनी कोताहियों और नाकामियों के लिये दूसरों को कटघरे में खड़ा करने लगते हैं और दूसरों पर आसानी से यह आरोप लगा देते हैं कि फलाँ फलां की वजह से पिछड़ गये या अपने मकसद में नाकाम हो गये जबकि होना तो यह चाहिए कि अपनी हर नाकामी के बाद आत्म निरीक्षण करें, जैसे कि अल्लाह तआला कोई पाप हो जाने के बाद अपने बन्दों से कहता है कि पाप से तौबा करो। इसी तरह हम को भी यही करना चाहिए कि अपनी गलतियों और भूल चूक को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। ज्ञान में यह बात आई है कि कुछ संस्थाओं के द्वारा चलने वाले स्कूलों में जब महज़ कुछ बच्चों के नम्बर कम आते हैं तो पूरा स्कूल प्रबन्धन इस चिन्ता और सोच में डूब जाता है कि आखिर कुछ बच्चों के कम नम्बर आने की वजह क्या है उनके स्कूलों की तालीम का जो स्टैण्डर्ड है वह हम सबके सामने है जब एडमीशन का वक़्त आता है तो लोग अपने बच्चों को इन स्कूलों में एडमीशन दिलाने के लिये लाइन में खड़े हो जाते हैं, भीड़ देखने की होती है। अगर इस दृष्टि से देखा जाए तो क्या हम लोग अपने स्कूलों का अवलोकन कर सकते हैं, पूरी कम्यूनिटी को यह चिन्ता होनी चाहिए कि हमारे पास भी उसी स्तर का स्कूल होना चाहिए, लेकिन यह काम महज़ सोचने से नहीं होगा। गलती को सुधारने के लिये पहले अपनी गलती का एतराफ करना पड़ेगा, और पिछले दिनों तालीम के मैदान में जो कोताहियां हुई हैं उनको दूर करने के लिये आपसी ताल मेल से इन कमियों को दूर किया जा सकता है। और तालीम के मामले में जहां जहां कोताहियाँ हो रही हैं, उन बिन्दुओं पर गौर करना चाहिए, दूसरे सकूलों की तालीमी व्यवस्था को सामने रख कर सलेबस को बेहतर से बेहतर बनाया जाए इसी को आधार बनाकर तालीमी मैदान में आगे बढ़ा जा सकता है।

अपनी कोताहियों और गफलतों को दूसरे के सर डालना अकलमन्दी नहीं होगी इस लिये हमारे लिये ज़रूरी है कि हम पूरी गहराई से अपनी कमियों का आकलन करें और उसको दूर करने की चिन्ता और प्रयास करें। सफलता यही है कि हम अपनी कमियों और नाकामियों से सबक हासिल कर लें और ऐसा कदम उठाएं जो हमारे तालीमी, समाजी और आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने का माध्यम बन जाए।

❑ ❑ ❑

देश के विभिन्न स्थानों में सैलाब से जानी व माली नुक़सानात पर रंज व ग़म का इज़हार और सहयोग की अपील.

देश के विभिन्न स्थानों विशेष रूप से महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार आदि के बाज़ ज़िलों में गैर मामूली बारिश की वजह से सैलाब की अबतर स्थिति और इसके परिणाम में होने वाले भारी जानी व माली नुकसानात सख्त रंज व गम का कारण हैं और इस मुसीबत की घड़ी में सब ही से इन्सानियत के नाते सहयोग की अपील है। मुसीबत ग्रस्त एलाकों विशेष रूप से महाराष्ट्रा में बारिश रूकने का नाम नहीं ले रही है और तबाही बढ़ती जा रही है इसलिये प्रभावित लोग सब्र और संयम का दामन थामे रहें और आपसी भाई चारा और आपसी सहयोग का विशेष ख्याल रखें। इसके अलावा राष्ट्र व समुदाय के शुभचिंतकों से बिना धर्म के अन्तर के अपील की जाती है कि वह मुसीबत की इस घड़ी में मानवता के रिश्ते को निभाते हुए अपने भाइयों की भरपूर मदद करें। इसी तरह राज्य एवं केन्द्र सरकारों से मांग की जाती है कि प्रभावितों को राहत पहुंचाने, पुनर्वास और नुकसानात के मुआवजे के सिलसिले में उचित इकदामात करें। इसमें किसी तरह की कोताही न बर्ती जाए और प्रशासन को पूरी तरह चौकस कर दिया जाए।

मर्कज़ी जमीअत ने मुसीबत की इस घड़ी में प्रभावितों के लिये दुआ और तमाम भाइयों विशेष रूप से अपनी तमाम राज्य इकाइयों के पदधारियों से उनकी मदद के लिये अपने अपने राज्यों से भपरूर सहयोग की अपील की है। निःसन्देह इतने बड़े पैमाने पर जान व माल की तबाही व बर्बादी प्राकृतिक व्यवस्था का भाग है और इस तरह की प्राकृतिक आपदाएँ ज़मीन पर बसने वाले हम इन्सानों के पापों के साधारण हो जाने की वजह से भी आती हैं और इस तरह अल्लाह तआला सँभलने के लिये कभी कभी अपनी निशानियाँ ज़ाहिर करता है और अपने बाज़ बन्दों को आज़माता है इस लिये इस से बन्दों को इबरत हासिल करनी चाहिए और सब्र एवं आत्मनिरीक्षण से काम लेना चाहिए और विश्व स्तर पर जहाँ भी लोग तरह-तरह की परेशानियों में लिप्त हैं सबके लिये अल्लाह से आफियत की दुआ करनी चाहिए और सहयोग में जहाँ तक संभव हो हिस्सा लेना चाहिए। अल्लाह तआला प्रभावितों की विशेष मदद फरमाए और हम सबको हर तरह की मुसीबतों व बीमारियों से सुरक्षित रखे और भलाई के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की क्षमता दे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अध्यक्ष मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द व अन्य जिम्मेदारान व सदस्यगण

चेक/डराफ्ट इन नामों से बनायें।

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c: 629201058685
ICICI Bank (Chandni Chowk Branch)
RTGS/NEFT IFSC Code-ICIC0006292

Ahle Hadees Relief Fund
A/c No. 200110100007015
Bombay Mercantile Cooperative Bank LTD
IFSC Code: BMCB0000044
Branch: Darya Ganj, New Delhi